



03 अलसकथा

कवि परिचय :- महाकवि विद्यापति का जन्म मिथिला प्रान्त में वर्तमान मधुबनी जिले के बेनीपट्टी थाना अंतर्गत बिस्फी नामक गाँव में हुआ।

- इनके पिता गणपति ठाकुर मिथिला के राजा गणेश्वर के सभासद थे।
- गणेश्वर के बाद कीर्ति सिंह राजा हुए और विद्यापति उनके दरबार में आने जाने लगे।
- विद्यापति ने अपना प्रारंभिक ग्रन्थ कीर्तिलता कीर्ति सिंह के दरबार में राजा कीर्ति सिंह के नाम से ही रचा।
- कीर्ति सिंह के बाद क्रमशः देव सिंह और शिव सिंह राजा हुए। राजा शिव सिंह ने विद्यापति को अभिनव जयदेव की उपाधि प्रदान की जो सर्वप्रसिद्ध है।
- पुरुष परीक्षा:- इसे देख कर ज्ञात होता है कि यह कवि के पूर्ण विकसित मस्तिष्क की रचना है।
- इस नीति ग्रन्थ की रचना राजा शिव सिंह के आज्ञा से उन्ही के राज्यकाल में हुआ।

परि - यह एक नीति ग्रन्थ है जिसमें पंचतंत्र जैसी रोचक नीतिकथाएँ हैं जो पुरुषों के जीवन से सम्बंधित हैं। इसके नैतिक उपदेशों का युवक युवतियों के लिए विशेष महत्व है। नैतिक कथाओं के अतिरिक्त इसमें ललित कथाओं के रूप में धार्मिक एवं राजनीतिक विषयों का वर्णन किया गया है।

अयं पाठः विद्यापतिकृतस्य कथाग्रन्थस्य पुरुषपरीक्षा इति नामकस्य अंशविशेषः वर्तते। पुरुषपरीक्षा सरलसंस्कृतभाषायां कथारूपेण विभिन्नानां मानवगुणानां महत्त्वं वर्णयति, दोषाणां च निराकरणाय शिक्षां ददाति। यह पाठ विद्यापति रचित कथा ग्रन्थ पुरुष परीक्षा नामक ग्रंथ का अंश विशेष है। पुरुष परीक्षा संस्कृत भाषा में कथा द्वारा विभिन्न मानवीय गुणों के महत्व का वर्णन करता है और दोषों को दूर करने की शिक्षा देता है।

विद्यापतिः लोकप्रियः मैथिलीकविः आसीत्। अपि च बहूनां संस्कृतग्रन्थानां निर्माता अपि विद्यापतिः आसीत् इति तस्य विशिष्टता संस्कृतविषये अपि प्रभूता अस्ति। प्रस्तुते पाठे आलस्यनामकस्य दोषस्य निरूपणे व्यंग्यात्मिका कथा प्रस्तुता विद्यते। नीतिकाराः आलस्यं रिपुरुपं मन्यन्ते। विद्यापति लोकप्रिय मैथिली कवि थे और भी अनेक संस्कृत ग्रंथों के निर्माता भी विद्यापति थे। उनकी ऐसी विशेषता संस्कृत विषय में भी बहुत है। प्रस्तुत पाठ में आलस नामक दोष के निरूपण के लिए व्यंगात्मक कहानी प्रस्तुत करते हैं। नीतिकार लोग आलस्य को शत्रु मानते हैं।

आसीत् मिथिलायां वीरेश्वरः नाम मन्त्री। स च स्वभावाद् दानशीलः कारुणिकः च सर्वेभ्यः दुर्गतेभ्यः अनाथेभ्यः च प्रति अहम् इच्छाभोजनं दापयति। तत् मध्ये अलसेभ्यः अपि अन्नवस्त्रे दापयति। यतः -

मिथिला में वीरेश्वर नाम का एक मंत्री था और वह स्वभाव से दानी और दयावान था। वह दीन-दुःखियों तथा अनाथ लोगों को प्रतिदिन इच्छा भर भोजन देता था। वह आलसियों को भी अन्न-वस्त्र देता था। क्योंकि-

- यह एक नीति ग्रन्थ है जिसमें पंचतंत्र जैसी रोचक नीति कथाएँ हैं जो पुरुषों के जीवन से सम्बंधित हैं। इसके नैतिक उपदेशों का युवक युवतियों के लिए विशेष महत्व है।
- नैतिक कथाओं के अतिरिक्त इसमें ललित कथाओं के रूप में धार्मिक एवं राजनीतिक विषयों का वर्णन किया गया है।
- इस पुस्तक का विशेष महत्व है सन् 1830 में राजा काली कृष्ण बहादुर ने इसका अंग्रेजी में एवं सन् 1825 में फोर्ट विलियम कॉलेज कलकत्ता के अध्यापक हरप्रसाद ने हिंदी में अनुवाद किया।
- फोर्ट विलियम कॉलेज कलकत्ता जिसकी स्थापना 1800 में तत्कालीन गवर्नर जनरल लार्ड वेलेजली ने किया में पहले यह पाठ्य पुस्तक के रूप में पढ़ाई जाती थी।
- इन्होंने 03 भाषाओं में अपनी रचना की है संस्कृत मैथिली और संस्कृत प्राकृत मिश्रित मैथिली में जिसे अवहट्ट कहा जाता है।
- संस्कृत भाषा में सृजित इनके 12 काव्य हैं अवहट्ट में 02 प्रशस्ति काव्य कीर्तिलता और कीर्तिपताका।
- अन्य संस्कृत रचना :- भू-परिक्रमा, पुरुष परीक्षा, लिखनावली, शैव सर्वस्वसार, गंगा वाक्यावली, विभागसार, दानवाक्यावली, दुर्गाभक्ति तरंगिणी, गयापतलक वर्षकृत्य और मणिमंजरी।

निर्गतीनां च सर्वेषाम् अलसः प्रथमः मतः।
किंचित् न क्षमते कर्तुं जाठरेण अपि वह्निना ॥

दिनहीन मनुष्यों में पहला स्थान आलसियों का होता है। जो अपने पेट की अग्नि शांत करने के लिये भी कुछ करने के लिये समर्थ नहीं होते।

ततः अलसपुरुषाणां तत्र इष्टलाभं श्रुत्वा बहव तुन्दपरिमृजाः तत्र वर्तुलिबभूवुः यतः –

इसके बाद अलसशाला में आलसी व्यक्ति के वहाँ इच्छित लाभ को सुनकर बहुत से तोंद बड़े लोग एकत्रित हो गये। क्योंकि-

स्थितिः सौकर्यमूला हि सर्वेषाम् अपि संहते।
सजातीनां सुखं दृष्ट्वा के न धावन्ति जन्तवः॥

सुविधाजनक स्थिति सभी लोग चाहते हैं। कौन जीव है जो अपने जाति का सुख देखकर नहीं दौड़ता हो।

पश्चात् अलसानां सुखं दृष्ट्वा धूर्ता अपि कृत्रिमम् आलस्यं दर्शयित्वा भोज्यं गृह्णन्ति। तदनन्तरम् अलसशालायां बहुद्रव्यव्ययं दृष्ट्वा तत्-नियोगिपुरुषैः परामृष्टम् – यत् अक्षमबुद्ध्या करुणया केवलम् अलसेभ्यः स्वामी वस्तूनि दापयति, कपटेना अनलसा अपि गृह्णन्ति इति अस्माकं प्रमादः।

बाद में आलसियों का सुख देखकर धूर्त भी बनावटी आलस्य दिखाकर भोजन करते थे। इसके बाद अलसशाला में धन का अधिक खर्च देखकर वहाँ नियुक्त राज पुरुषों के द्वारा विचार किया गया कि बुद्धि से हीन पर दया करके स्वामी द्वारा केवल आलसियों को वस्तुएँ दी जाती हैं, कपट से आलस्यहीन भी वस्तुएँ पाते हैं। यह हमारा आलस्य है।

यदि भवति तदा अलसपुरुषाणां परीक्षां कुर्मः इति परामृश्य प्रसुतेषु अलसशालायां तत्-नियोगिपुरुषाः वह्निं दापयित्वा निरूपयामासुः। यदि ऐसा होता है तब आलसी पुरुषों की जाँच की जाए, ऐसा विचारकर सोये हुये में आलसियों के घर में आग लगाकर निरीक्षण किया जाता है।

ततो गृहलग्नं प्रवृद्धम्-अग्निं दृष्ट्वा धूर्ताः सर्वे पलायिताः। पश्चात् ईषत् अलसा अपि पलायिताः।

- इनकी मृत्यु गंगा तट पर ही हुई थी जबकि ये गंगा सेवन करने गये थे।

अलसकथा

JOIN ONLINE LEARNING PROGRAM

BSEB Learning App

Examwarriors.in

Whatsapp 6203637662

इसके बाद घर में लगे बढ़ते आग को देखकर सभी धूर्त लोग भाग गये। इसके बाद कुछ आलसी लोग भी भाग गये।

चत्वारः पुरुषाः तत्र एव सुप्ताः परस्परम् आलपन्ति। एकेन वस्त्र आवृतमुखेन उक्तम्- अहो कथम् अयं कोलाहलः ? द्वितीयेन उक्तम्- तर्क्यते

यत् अस्मिन् गृहे अग्निः लग्नः अस्ति। तृतीयेन उक्तम्- कः अपि तथा धार्मिकः न अस्ति य इदानीं जलाद्रैः वासोभिः कटैवाः अस्मान् प्रावृणोति ? चतुर्थेन उक्तम्- अये वाचालाः। कति वचनानि वक्तुं शक्नुथ ? तूष्णीं कथं न तिष्ठथ ?

चार व्यक्ति वहीं सोये परस्पर बात करते हैं। एक ने कपड़े से मुख ढक कर बोला- अहो यह कैसा कोलाहल है ? दूसरे ने कहा-लगता है कि इस घर में आग लग गई है। तीसरे ने कहा- कोई भी ऐसा धार्मिक नहीं है, जो इस समय पानी से भीगें कम्बल हमलोगों को ओढा दे। चौथे ने कहा- अरे, बहुत बोलने वाले कितनी बातें करते हो? चुपचाप क्यों नहीं रहते हो?

ततः चतुर्णाम् अपि तेषाम् एवं परस्परालापं श्रुत्वा बहिनं च प्रवृद्धम् एषाम् उपरि पतिष्यन्तं दृष्ट्वा नियोगिपुरुषैः वधभयेन चत्वारः अपि अलसाः केशेषु अवाकृष्य गृहीत्वा गृहाद् बहिःकृताः। पश्चात्त अनालोक्य तैः नियोगिभिः पठितम्-

तब चारों की आपसी बात सुनकर और उसके ऊपर फैली हुई आग को गिरते देखकर नियुक्त राज पुरुष के द्वारा मृत्यु होने की भय से चारों आलसी को बाल पकड़ कर खींचते हुए बाहर निकाला गया तब उन्हें इस प्रकार देखकर नियुक्त राज पुरुषों के द्वारा कहा गया-

पतिः एव गतिः स्त्रीणां बालानां जननी गतिः।
न अलसानां गतिः काचित् लोके कारुणिकं बिना॥

स्त्रियों का आश्रय पति होता है, बच्चों की माँ होती है, लेकिन आलसियों का दयावान पुरुष के अलावा संसार में कोई और नहीं होता है।

पश्चात्तेषु चतुर्षु अलसेषु ततः अपि अधिकतरं वस्तु मन्त्री दापयामास।

और बाद में उन चारों को पहले से भी अधिक वस्तुएँ मंत्री द्वारा दी जाने लगी।